# शैक्षिक अधिकार और शिक्षण की चुनौतियाँ: समावेशन और उसका तरीका

सिद्धि व्यास

समावेशन को अमल में लाने के लिए स्वीकरण या अपनाने का नजरिया जरूरी है। भारत में धर्मों, रीति–रिवाजों, भाषाओं और संजातीयता की इतनी विविधताएँ हैं कि हमें पेशेवर, सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से समावेशन करने और भिन्नताओं के स्वीकरण या अपनाने के अनेक अवसर मिलते हैं। हम अपने दिन–प्रतिदिन के कार्यों तथा सामाजिक और व्यक्तिगत व्यवहारों में समावेशन और बहिष्करण करते ही रहते हैं। इस प्रकार समावेशन की अवधारणा भारतीय समाज या इसकी प्राचीन और/या पारम्परिक प्रथाओं के लिए नई बात नहीं है क्योंकि हमारी स्थिति और हमारे सन्दर्भ में बहुत सारी विविधताएँ हैं। कुछ उदाहरण देखें– कौटिल्य (c.320 ई.पू.) ने अपनी प्रस्तुति *गाँवों का गठन, सरकारी अधीक्षकों के कर्तव्य* में उल्लेख किया है कि समुदाय के जो लोग अपनी देखभाल करने में असमर्थ हैं, उनके लिए राज्य और समाज की क्या जिम्मेदारियाँ हैं (शामाशास्त्री,1956)। अभिलेख या रेकॉर्ड भी यह संकेतित करते हैं कि अकबर के शासनकाल (1556–1605) के दौरान मदरसों के माध्यम से शिक्षा के लिए समावेशी दृष्टिकोण अपनाया गया था (चौधरी, 2008)। एक अन्य उदाहरण है *पंचतन्त्र*। यह दन्तकथाओं और नैतिकता का एक प्यारा–सा ऐतिहासिक संग्रह है जो यह बताता है कि विविधताओं को कैसे सम्बोधित किया जाए और शिक्षण को अधिगम की जरूरतों के अनुसार कैसे रूपान्तरित किया जाए। पूर्व औपनिवेशिक पुस्तक *पंचतन्त्र* शायद शिक्षण शास्त्र पर पहला ज्ञात पाठ्य है, जिसमें संवाद का सहारा लिया गया और अधिगम के लक्ष्यों को प्राणि–जगत के उदाहरणों से सम्बद्ध किया गया। इस पुस्तक की प्रेरणा थी ऐसे "अशिष्ट" राजकुमारों को पढ़ाना (शास्त्री,1967, पृ.2) जिन्हें "पढ़ाया नहीं जा सकता था" और जो "शिक्षा के दुश्मन" थे (राइडर, 1949 पृ.12)।

तो हमारी औपचारिक प्रणाली ने किसी न किसी रूप में समावेशी दृष्टिकोण को लागू करने का प्रयास किया है और कहीं–कहीं तो लागू भी किया है। इस लेख का उद्देश्य यही है कि नियमित स्कूलों में निःशक्त बच्चों के समावेशन के पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाए। निःशक्तता अधिकार आन्दोलन और 1995 के निःशक्त व्यक्ति अधिनियम के लागू होने के बाद निःशक्त व्यक्तियों के लिए समावेशी शिक्षा पर ध्यान दिया जाने लगा। सर्व शिक्षा अभियान के समावेशी शिक्षा सम्बन्धी प्रावधानों की वजह से ये बातें कक्षा और शिक्षकों के पेशेवर नियमित कार्यों में तथा उनकी अन्तःक्रियाओं में और अधिक औपचारिक रूप से व्यवहार में लाई जाने लगीं। हाल ही के नीति सम्बन्धी घटनाक्रम से, विशेष रूप से शिक्षा का अधिकार अधिनियम के कारण इस बात पर अब और अधिक ध्यान दिया जाने लगा है कि शिक्षा ***सभी*** के लिए हो और अब समावेशी शिक्षा शिक्षकों और शोधकर्ताओं के जाँच का विषय बन गई है। हाल ही के विधायी उपायों के बाद समावेशी शिक्षा के बारे में जागरूकता के साथ निर्णय लिए जाने लगे हैं और इस बात का अवलोकन किया जाने लगा है कि कहाँ–कहाँ समावेशी तरीकों का पालन नहीं किया जा रहा है।

जो लोग निःशक्तता अधिकारों के हिमायती हैं, उनको समावेशी शिक्षा से प्रोत्साहन मिलता है क्योंकि जिन शैक्षिक और सामाजिक मान्यताओं के कारण अशक्त बच्चों को नहीं अपनाया जाता, समावेशी शिक्षा के माध्यम से उन मान्यताओं को रोकने के प्रयास किए जाते हैं जिसके परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों की योग्यता और शक्ति को मान्यता मिलती है, अन्यथा ये क्षमताएँ फीकी पड़ जाती हैं। माता–पिता के लिए समावेशी शिक्षा प्रणाली एक नई आशा लेकर आती है क्योंकि इसमें स्कूल, कक्षा और सहपाठी उनके बच्चों को अपनाने लगते हैं। शिक्षकों को इस बात की चिन्ता होती है कि उनका शिक्षण प्रभावी हो, लक्ष्य प्राप्ति में सहायक हो और कक्षा की वैधानिक अपेक्षाओं को भी पूरा करता हो। हममें से जो लोग स्कूली शिक्षा के सुधार या अशक्त बच्चों की शिक्षा को लेकर चिन्तित हैं, उनके लिए भी समावेशी शिक्षा शैक्षिक असमानताओं को

सम्बोधित करने की दिशा में एक नई आशा दिलाती है। इस प्रकार समावेशी शिक्षा से ऐसे विद्यार्थियों को अपनाने का अवसर मिलता है जिन्हें ऐतिहासिक, सांस्कृतिक या शिक्षण शास्त्रीय रूप से वह शिक्षा नहीं मिल पाई थी जो अधिकांश विद्यार्थियों को मिली थी।

नीति के उद्देश्य को लागू करने के लिए हमें अपने दृष्टिकोण को बदलना होगा; नीति के क्रियान्वयन के लिए हमें समावेशी कक्षा और स्कूली संस्कृति में सृजन, संवर्धन और अभ्यास के लिए उद्देश्यपूर्ण ढंग से योजना बनाने की जरूरत है। तो क्या हमारी कक्षाएँ इसके लिए तैयार हैं? कक्षा की विविधताओं को औपचारिक रूप से सम्बोधित करने के लिए अपनी योजना बनाने और उसे व्यवहार में लाने के लिए शिक्षक को किस तरह की तैयारी करनी चाहिए? इन प्रश्नों के समाधान के लिए मैं अपने शिक्षण के अनुभवों और समावेशी कक्षाओं के लिए शिक्षक शिक्षा सामग्री तैयार करने के अपने हाल के कार्य सम्बन्धी अनुभवों का उपयोग करना चाहूँगी।

## असमानताओं को स्वीकारना/अपनाना, विविधताओं का समावेश करना

जैसा कि पहले कहा गया है, समावेशन को व्यवहार में लाना स्वीकरण या अपनाने की गुणवत्ता को दर्शाता है। अपनी कक्षाओं और स्कूलों में समावेशी संस्कृति का निर्माण करने की दिशा में पहला कदम यह है कि हम यह बात स्वीकार कर लें कि विद्यार्थियों में असमानताएँ होती हैं और उनके सीखने के तरीके अलग–अलग होते हैं। एक शिक्षिका के रूप में यह सबक मेरे लिए सबसे अधिक मूल्यवान रहा है और इसका कारण है आरम्भिक शिक्षा के मेरे अपने अनुभव। यह एक ऐसा सबक है जिसे कक्षा की बदलती हुई परिस्थितियों में कई सालों तक पढ़ाने के दौरान मेरे विद्यार्थी मुझे याद दिलाते रहे हैं।

शिक्षण के समावेशी तरीके के लिए नियोजन और भाषा के उपयोग में संवेदनशीलता तथा शिक्षण शैलियों की पहचान जरूरी है ताकि एक ऐसी संस्कृति का निर्माण हो सके जो विभिन्न प्रकार की असमानताओं को स्वीकार करे या अपनाए जैसे लिंग, विश्वास और संजाति, भाषाओं, सीखने की शैलियों और क्षमताओं सम्बन्धी असमानताएँ। यह एक ऐसा विचार है जो शायद समावेशी कक्षा की योजना बनाने वाले शिक्षक को थोड़ा–सा डरा दे। पर एक शिक्षिका और शिक्षक प्रशिक्षिका के रूप में मैंने यह सीखा है कि विद्यार्थियों की विविधताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ की योजना बनाना बहुत लाभप्रद होता है। समय के साथ–साथ ऐसा भी हुआ कि अपनी कक्षा के लिए विविध जरूरतों पर ध्यान केन्द्रित करने और हर एक पर अलग–अलग ध्यान देने की बजाय मैं सहज रूप से विविधताओं का ध्यान रखते हुए योजना बनाने लगी। मेडिकल, शारीरिक, संवेदी और संज्ञानात्मक जरूरतों वाले बच्चों को पढ़ाना मेरे साथियों के लिए एक रचनात्मक प्रक्रिया बन गई,[1] मेरी कक्षा योजना और व्यवस्था में विद्यार्थियों की विशेषताओं, उनके व्यक्तित्व, उनकी शक्ति, प्राथमिकताओं और जरूरतों को शामिल करना एक सुखद बात थी। यह समझना जरूरी है कि हमारी कार्यप्रणाली में, सभी के लिए, समावेशी शिक्षा की अवधारणा सहायक है, उलझन नहीं। उन अलग–अलग दृष्टिकोणों को समझना भी जरूरी है जिनका प्रयोग समावेशन के प्रयासों को और भी सफल बनाने के लिए प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

## कार्यनीतियों के रूप में शक्ति और असमानताओं का उपयोग

''हमने कभी यह सोचा ही नहीं था कि हम सारे ('सारे पर जोर दिया गया) बच्चों को एक साथ इस तरह से भी पढ़ा सकते हैं।"

(पब्लिक स्कूल के शिक्षक, एन.सी.ई.आर.टी. कार्यशाला, जनवरी 2014)

संवेदी, शारीरिक, संज्ञानात्मक और/या एकाधिक अशक्तताओं वाले विद्यार्थियों की नियमित कक्षा में शिक्षण पर केन्द्रित एक कार्यशाला के बाद हमें यह प्रतिक्रिया मिली। हमारे सभी प्रतिभागी नियमित प्रारम्भिक पब्लिक स्कूल के शिक्षक थे। वैसे तो इस चालू कार्यशाला का केन्द्रबिन्दु अशक्त विद्यार्थियों को नियमित कक्षाओं में समावेशित करना है, लेकिन अपने पब्लिक स्कूलों के लिए शिक्षक शिक्षा की सामग्री तैयार करते समय मेरा उद्देश्य यह रहता है कि शिक्षक यह बात समझ पाएँ कि भले ही कक्षा में समानताएँ और असमानताएँ हों या न हों, तो भी सभी विद्यार्थियों की मदद करने लिए कोई एक तरीका

*[1]हर बच्चे की जरूरत के अनुसार, एक शारीरिक, व्यावसायिक और वाक चिकित्सक (थेरपिस्ट) और/या दिकविन्यास प्रशिक्षक से परामर्श करना चाहिए ताकि विद्यार्थी के लिए उनकी चिकित्सा के लक्ष्य ही शामिल किए जा सकें। मैंने कुछ ऐसे कार्यक्रमों के लिए भी काम किया है जिनमें कला, संगीत और नृत्य के चिकित्सक (थेरपिस्ट)भी मुहैया कराए गए। पाठ योजना में उनके लक्ष्यों को शामिल करने से कक्षा के लक्ष्यों को समृद्ध किया जा सकेगा और उन्हें पाने में आसानी हो सकती है।*

नहीं होता। हमारे सम्बन्धित काम भी यही बताते हैं कि शिक्षक भी इस विचार को व्यावहारिक मानते हैं और उन्होंने सुझाव दिया है कि कार्यशालाओं में इस विषय पर विस्तारित सत्र रखे जाएँ–इस बात से हमारे प्रयास और भी पुष्ट होते हैं।

"भाषा के बिना लोगों से बात नहीं की जा सकती और उन्हें समझा नहीं जा सकता; उनकी आशाओं और आकांक्षाओं को साझा नहीं किया सकता, उनके इतिहास को नहीं समझा जा सकता..."(मंडेला, 1995, पृ. 84)।

कक्षा में शिक्षक के काम को डिजाइन और परिभाषित करने के लिए विद्यार्थियों के बारे में, वे सम्भव अनुभव जो उन्हें हुए हों या न हुए हों और उनकी पृष्ठभूमि आदि बातों की समझ रखना महत्त्वपूर्ण है। मैं ऊपर दिए गए आंशिक उद्धरण[2] में दिए गए शब्द *भाषा* के अर्थ का विस्तार करके इस बात के महत्त्व को सामने लाना चाहती हूँ कि विद्यार्थियों की प्रस्तुति, उनके अनुभवों की अभिव्यक्ति, उनकी समझ और संसार सम्बन्धी उनके वर्तमान विचार आदि को पहचानना महत्त्वपूर्ण है। उनकी अभिव्यक्ति की भाषा को पहचानने से हमारे भीतर के शिक्षक को ऐसे बच्चों को समझने और उनकी सहायता करने में मदद मिलेगी जो मुख्यधारा के बाहर हैं ताकि वे भी मुख्यधारा के भीतर आ सकें।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद का विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (Department of Education of Groups with Special Needs (DEGSN)) पब्लिक स्कूल के शिक्षकों के लिए शिक्षक सुगमीकरण सामग्री का विकास कर रहा है जिससे वे समावेशी शिक्षा के लिए अपेक्षित परिवर्तन आसानी से कर सकें।[3]

इनमें वे सुझाव, संकेत, विचार और कार्यनीतियाँ शामिल हैं, जिन्हें हमारे शोध और DEGSN द्वारा नियमित और विशेष शिक्षा के शिक्षकों के लिए आयोजित कई कार्यशालाओं[4] से प्राप्त जानकारी के माध्यम से विकसित किया गया है। शिक्षक शिक्षा सामग्री से सम्बन्धित चालू कार्यशालाओं में शिक्षकों से व्यावहारिक रूप से गतिविधियाँ करवाई जाती हैं ताकि वे एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों के पाठों के अनुकूलन, रूपान्तरण और नियोजन के द्वारा समावेशी दृष्टिकोण वाले अपने खुद के तरीके विकसित कर सकें। चित्र 1 में कुछ सुझाव दिए गए हैं जो मेरे शिक्षण के अनुभवों पर आधारित हैं और जिन्हें समावेशी संस्कृति का निर्माण करने में शिक्षकों की मदद करने के लिए हमने साझा किया है।

अमरीकी विज्ञान शिक्षक Bill Nye (1955) के साथ हुए एक ऑनलाइन साक्षात्कार का ये हिस्सा बहुत लोकप्रिय उद्धरण बन गया है "आप जब भी किसी से मिलते हैं तो वह कुछ ऐसा जानता होता है जो आप नहीं जानते (2012)।" यह उद्धरण इस बात को उजागर करता है कि समावेशन के लिए आप जो भी प्रयास करते हैं उसमें विद्यार्थियों को शामिल करना कितना महत्त्वपूर्ण है। इसमें सन्देह नहीं कि शिक्षण से सन्तुष्टि मिलती है लेकिन यह थकाऊ भी है और खास तौर पर समावेशी कक्षा के लिए काम करना काफी चुनौतीपूर्ण कार्य है। जैसा कि पहले भी कहा गया है कि जब विशेष सेवाओं की जरूरत होती है तब चुनौतियों का ध्यान रखते हुए कार्य करने, नवाचारों को शामिल करने और संसाधनों का उपयोग करने से समावेशी शिक्षण के अनुभव प्रभावी और सुखद हो सकते हैं। इस प्रक्रिया में, समावेशी अनुभवों के माध्यम से सीखने वाले विद्यार्थी आपसी समानताओं और असमानताओं के बारे में सीखेंगे। एक और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह होगी कि उन्हें इस बात का ज्ञान हो जाएगा कि वे अलग हैं और इसलिए विशेष हैं क्योंकि वे अपने ही अनूठे तरीके से इस सहयोगात्मक प्रक्रिया में योगदान दे रहे हैं।

---

[2] *पूरा उद्धरण इस प्रकार है: "भाषा के बिना लोगों से बात नहीं की जा सकती और उन्हें समझा नहीं जा सकता; उनकी आशाओं और आकांक्षाओं को साझा नहीं किया सकता, उनके इतिहास को नहीं समझा जा सकता, उनकी कविता की सराहना नहीं की जा सकती और न ही उनके गीतों का आस्वादन किया जा सकता है।"*

[3] *प्रेस में, व्यास और जुलका*

[4] *शिक्षक शिक्षा पुस्तिका/हैण्डबुक के लिए आरम्भिक जानकारी पाने के लिए अर्ध–औपचारिक साक्षात्कारों के साथ–साथ ये तीन कार्यशालाएँ भी आयोजित की गईं– (i) जुलाई 2013 में एन.सी.ई.आर.टी. परिसर, नई दिल्ली में आवश्यकता के आकलन पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पब्लिक स्कूलों के नियमित शिक्षकों और संसाधक शिक्षकों ने भाग लिया। (ii) सितम्बर 2013 में बेंगलूरु में दूसरी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें विभिन्न अशक्तता वाले क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों, प्रशिक्षकों और अधिकारियों तथा विशेष व समावेशी सेटिंग में कार्यरत विशेष शिक्षा के शिक्षकों को भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया। (iii) तीसरी कार्यशाला अक्टूबर 2013 में एन.सी.ई.आर.टी. परिसर, नई दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें पब्लिक और निजी स्कूलों के विशेष शिक्षकों, पब्लिक स्कूलों के नियमित शिक्षकों और प्रारम्भिक शिक्षा विभाग (Department of Elementary Education (DEE), एन.सी.ई.आर.टी के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।*

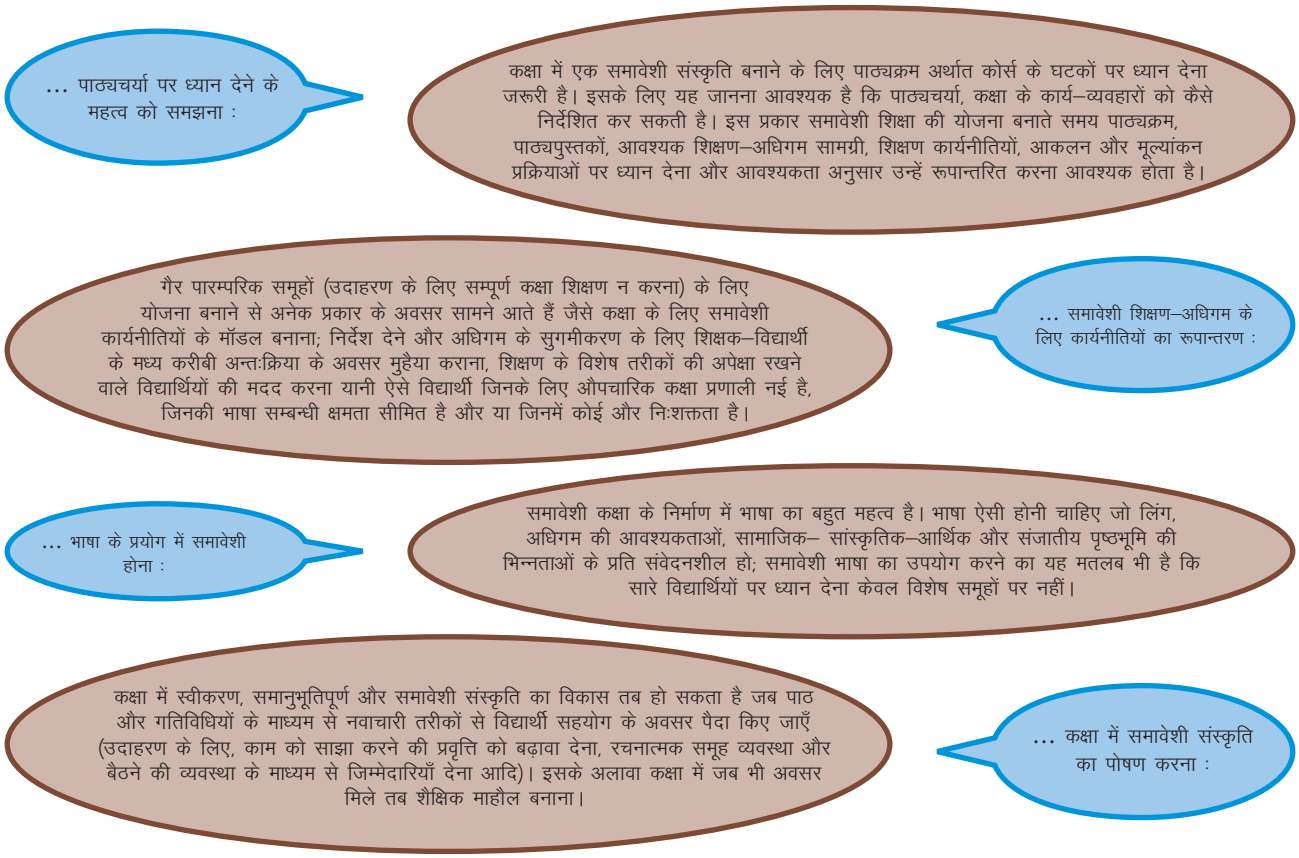


*चित्र 1 : शिक्षण–अधिगम के लिए समावेशी दृष्टिकोण को विकसित करने के सुझाव*

**References:**


- Choudhary, S. K. (2009). Higher education in India: a socio-historical journey from ancient period to 2006-07. The Journal of Educational Enquiry, 8(1), 50-72.
- Kautilya. (1967). Kautilya's Arthasastra (R. S. Sastry, Trans. 8th ed.). Mysore, India: Mysore Printing and Publishing House.
- Mandela, N. (1995). Long walk to freedom : the autobiography of Nelson Mandela. Boston: Back Bay Books.
- Ryder, A. W. (1949). Panchantra (A. W. Ryder, Trans. 8th ed.). Bombay: Jaico Books. Vishnusharma, P. (1967). Panchatantra: Pandit Vishnusharma Virachit Panchatantra: Neetishastranee bodhprad Kathaao (P. P. H. Shastri, Trans. 4th ed.). Bombay: Gujarat Printing Press.
- Vyas, S., Julka, A. (in press). Guidelines for Teachers Creating Inclusive Classrooms: Tips, Strategies, and Suggestions for Inclusion of All when you have a Student with Special Needs in your Classroom. NCERT Publications
- Nye, B. (2012, July 27). IAm Bill Nye the Science Guy, AMA: IAmA Redditt. Retrieved from http://www.reddit.com/r/IAmA/comments/x9pq0/iam_bill_nye_the_science_guy_ama

**सिद्धि व्यास,** Ed.D., पिछले बीस वर्षों से शैक्षिक विकास के कार्य में लगी हुई हैं; वे भारत और अमेरिका में निजी और पब्लिक स्कूलों में शिक्षिका के रूप में कार्य कर चुकी हैं; उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय राहत समिति, न्यूयॉर्क के साथ भी कार्य किया; उन्होंने The University of TX, Austin और University of Michigan, Ann Arbor में शिक्षक प्रशिक्षिका के रूप में भी काम किया जहाँ उन्होंने Educational Studies and Curriculum] Instructional Development में graduate scholarship के लिए कार्य किया। कोलम्बिया विश्विद्यालय के शिक्षक कॉलेज में शिक्षा और विकास अध्ययन में अपने डॉक्टरेट शोध के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में राज्य और नागरिक समाज के सहयोग का पता लगाया। उन्होंने भारत के ग्राम और शहरों के निजी व पब्लिक स्कूलों में नीति के तुलनात्मक अध्ययन का कार्य किया। अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर **2013** तक उन्होंने वहाँ शिक्षण–कार्य किया। एन.सी.ई.आर.टी. के विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग में शिक्षक शिक्षा सामग्री के विकास और Tata Institute of Social Sciences (TISS) के TISS School of Social Work's Center for Disability and Action में अध्ययन के स्नातकोत्तर कोर्स के विकास में परामर्श प्रदान किया है। सम्प्रति वे अपने डॉक्टरेट के शोध पर आधारित पुस्तक लिखने में व्यस्त हैं। उनसे srv12@columbia.edu और siddhivyas@gmail.comij सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल